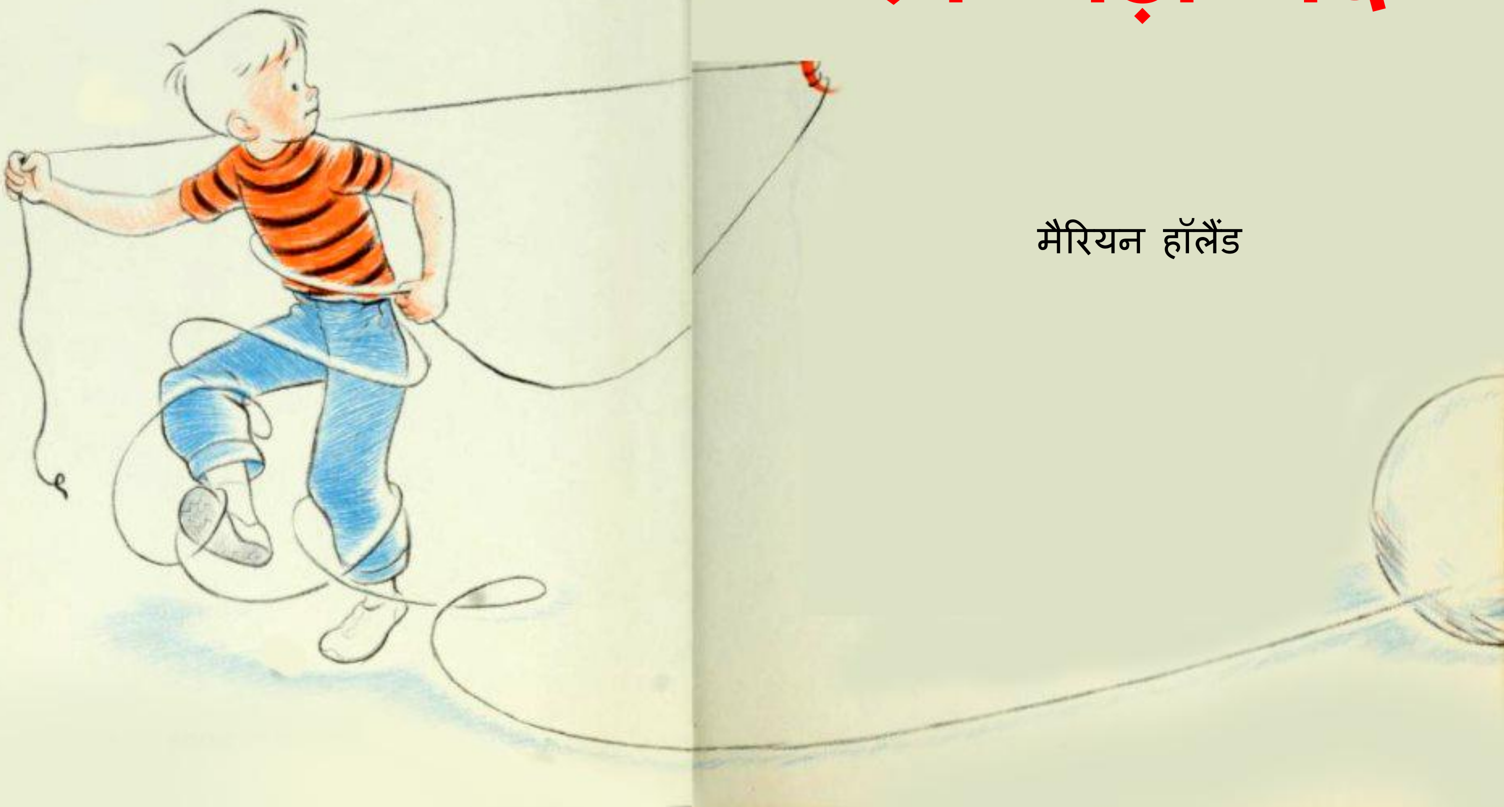


डोर की एक बड़ी गेंद

मैरियन हॉलैंड



डोर की एक बड़ी गेंद



मैरियन हॉलैंड

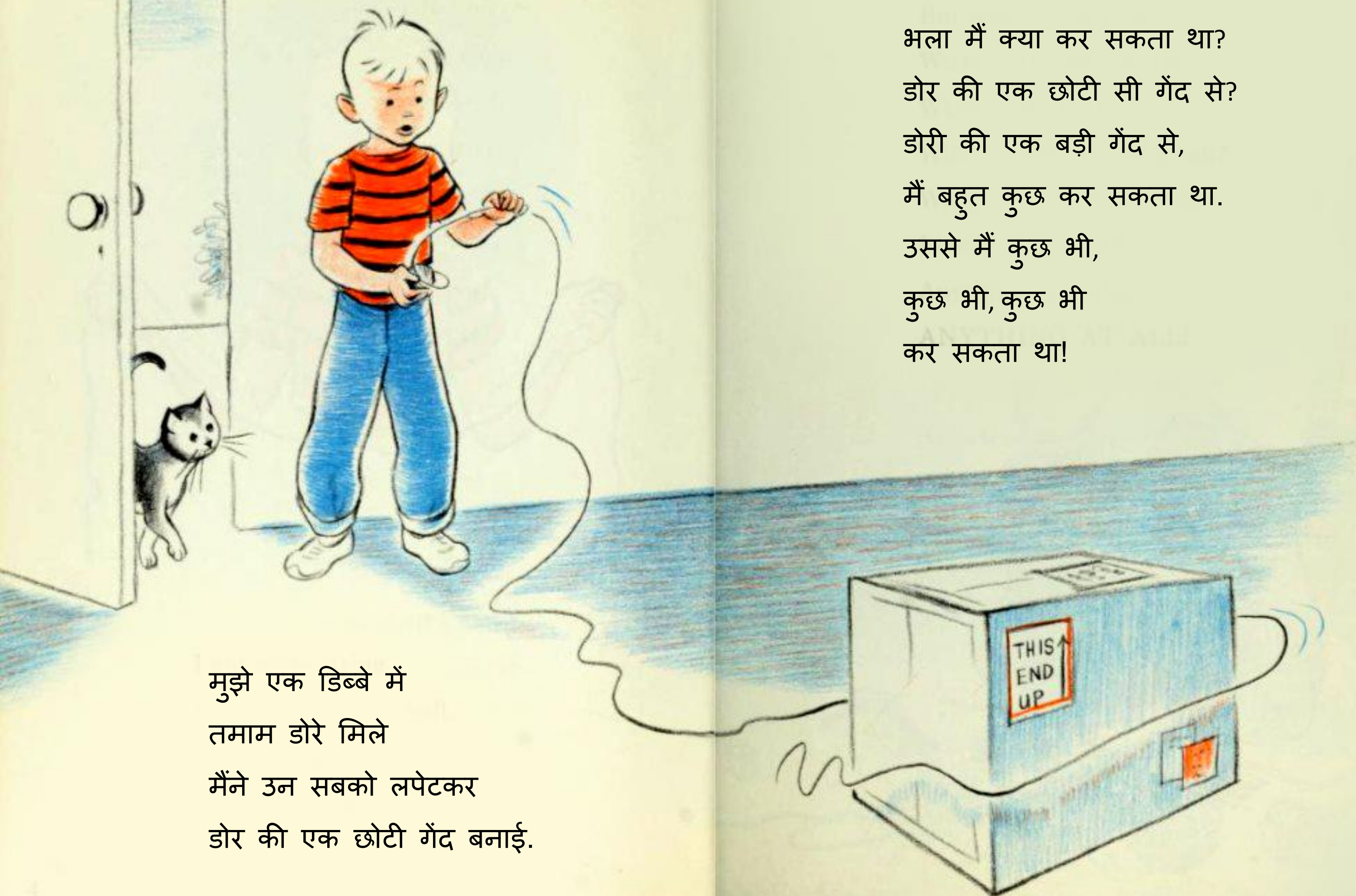


मेरे पास छोटी सी डोर थी.

लेकिन वो किसी काम की नहीं थी.

डोर की बड़ी गेंद बनाने के लिए

मैं और डोर ढूँढ़ने निकला.



मुझे एक डिब्बे में
तमाम डोरे मिले
मैंने उन सबको लपेटकर
डोर की एक छोटी गेंद बनाई.

लेकिन डोर की छोटी सी गेंद से
भला मैं क्या कर सकता था?
डोर की एक छोटी सी गेंद से?
डोरी की एक बड़ी गेंद से,
मैं बहुत कुछ कर सकता था.
उससे मैं कुछ भी,
कुछ भी, कुछ भी
कर सकता था!

मेरी माँ के पास डोर है.

देखो, कितनी सारी!

लेकिन क्या उन्होंने मुझे कुछ दी?

बिल्कुल नहीं.



"मेरी चीज़ों को हाथ मत लगाओ

यहाँ से तुरंत दफा हो जाओ!"

माँ भौंहें चढ़ाते हुए चिल्लाई.

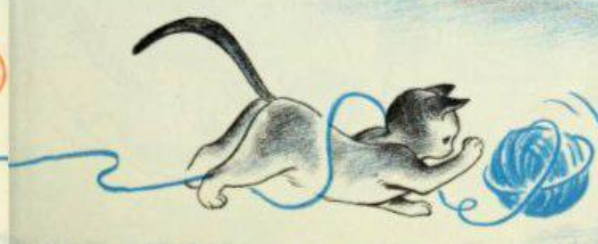
डोरी देने की बात उन्हें

बिल्कुल रास न आई.

तुरंत नीचे रखो!

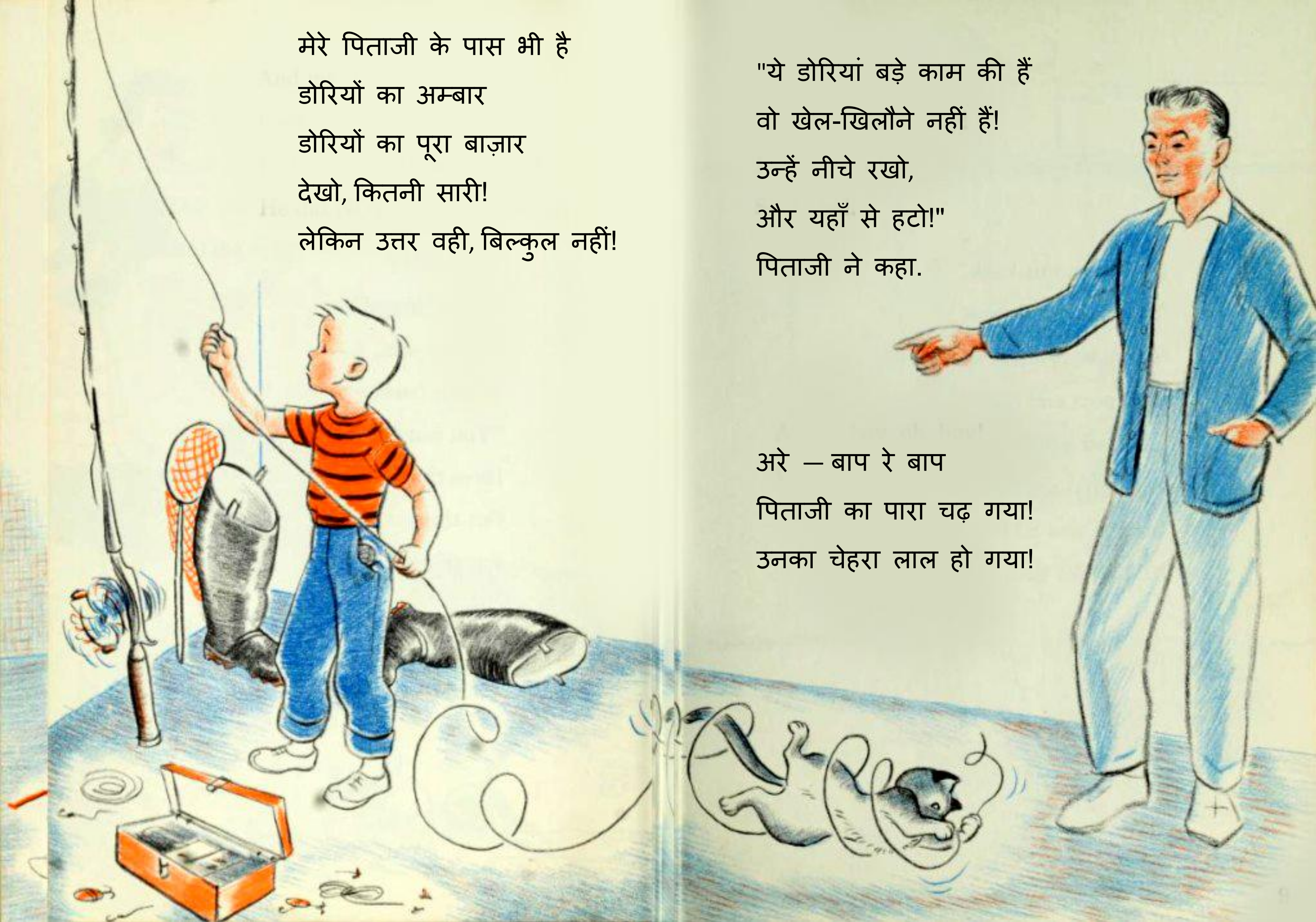
तुरंत नीचे रखो!"



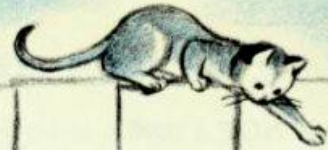


मेरे पिताजी के पास भी है
डोरियों का अम्बार
डोरियों का पूरा बाज़ार
देखो, कितनी सारी!
लेकिन उत्तर वही, बिल्कुल नहीं!

"ये डोरियां बड़े काम की हैं
वो खेल-खिलौने नहीं हैं!
उन्हें नीचे रखो,
और यहाँ से हटो!"
पिताजी ने कहा.



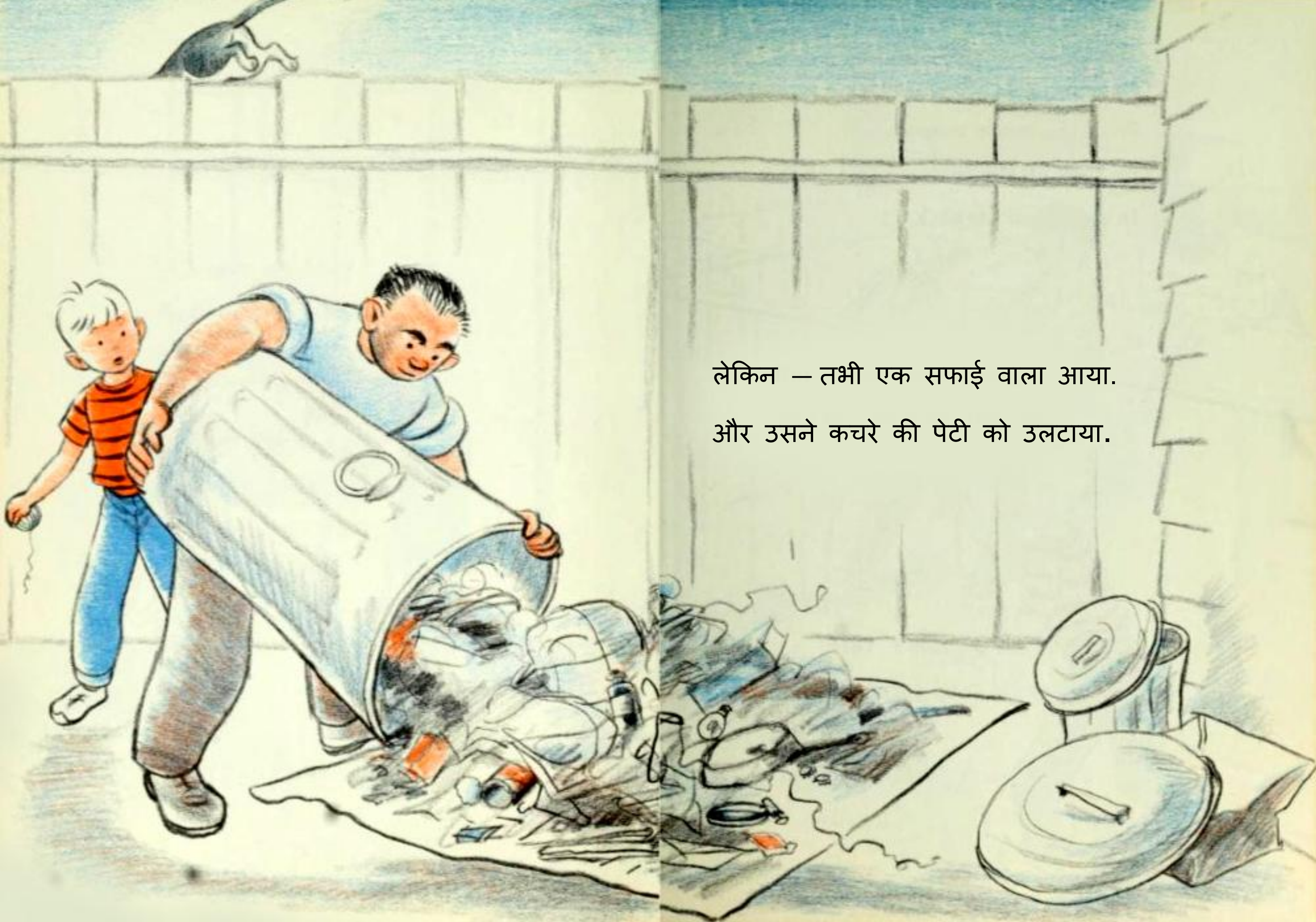
अरे – बाप रे बाप
पिताजी का पारा चढ़ गया!
उनका चेहरा लाल हो गया!



फिर मैं पीछे गया, मलबे के ढेर के पास.
वहाँ मोज़े और बोरे थे,
कुछ ज़्यादा कुछ थोड़े थे,
बर्तन और कड़ाही, चम्मच और सुराही
मैंने देखा और देखा
और फिर मैंने क्या देखा?
डोरी की लच्छी कुछ ख़राब कुछ अच्छी
कुछ छोटी, कुछ बड़ी
धागों की लड़ी ज़मीन पे पड़ी
मेरी आँखें चमक उठीं!



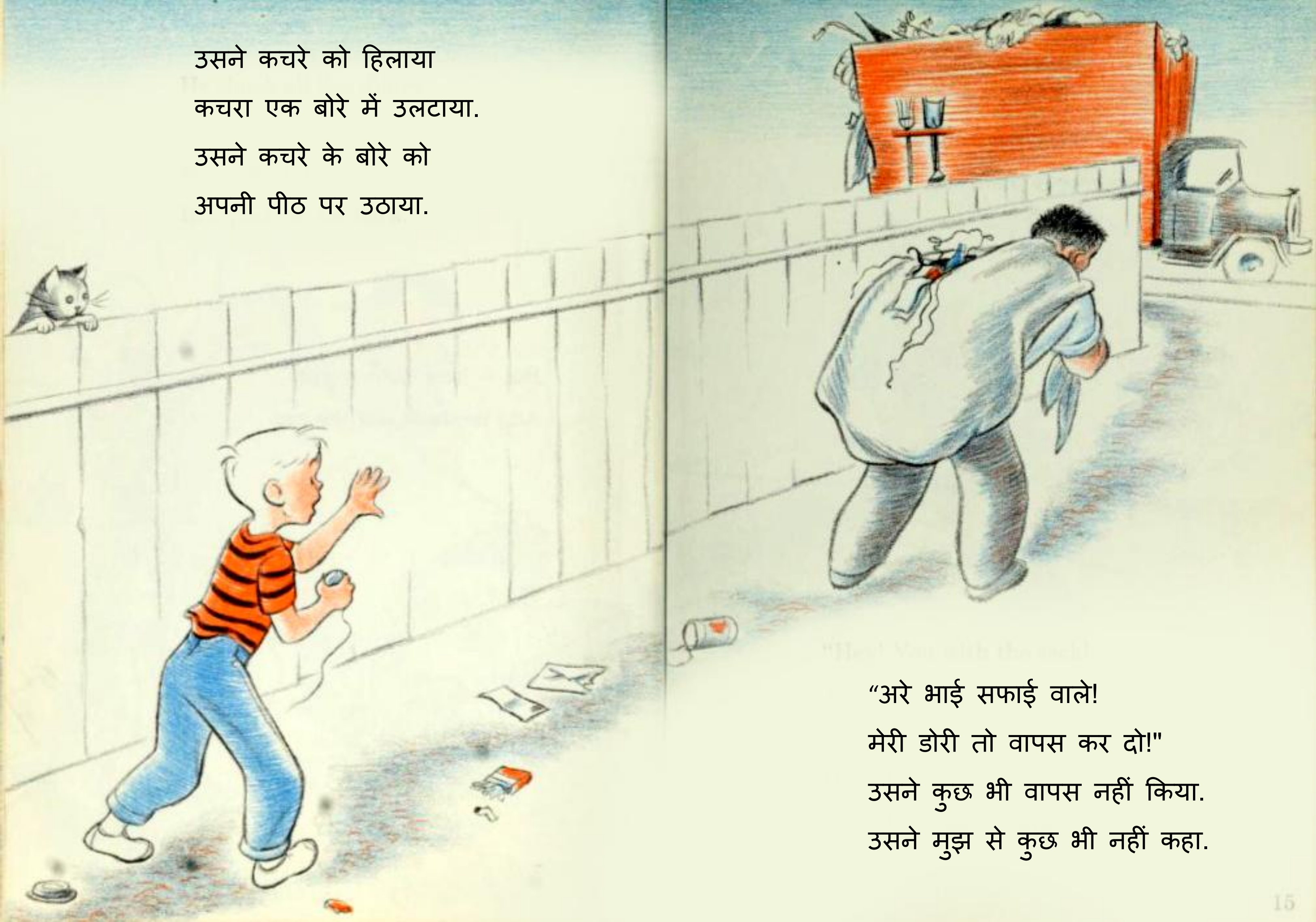




लेकिन — तभी एक सफाई वाला आया.

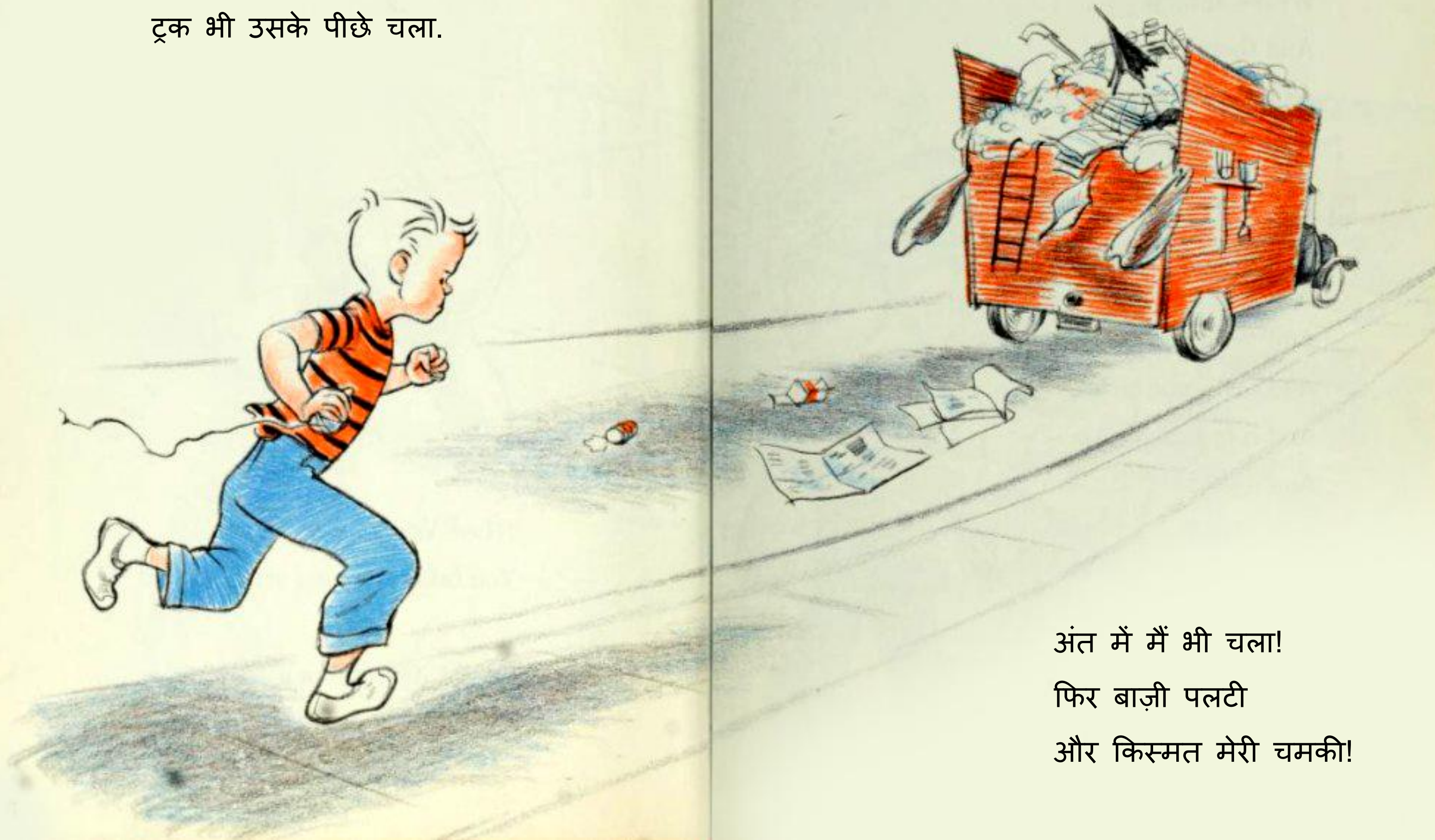
और उसने कचरे की पेटी को उलटाया.

उसने कचरे को हिलाया
कचरा एक बोरे में उलटाया.
उसने कचरे के बोरे को
अपनी पीठ पर उठाया.



“अरे भाई सफाई वाले!
मेरी डोरी तो वापस कर दो!"
उसने कुछ भी वापस नहीं किया.
उसने मुझ से कुछ भी नहीं कहा.

सफाई वाला आगे चला.
ट्रक भी उसके पीछे चला.

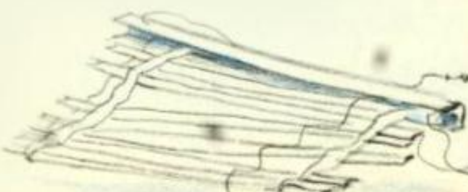


अंत में मैं भी चला!
फिर बाज़ी पलटी
और किस्मत मेरी चमकी!

धड़ाम!

ट्रक से गिरा कचरा
झूठन भरे प्लास्टिक के थैले
कपड़े, कुछ अच्छे कुछ मैले!
चिथड़ों का अम्बार
नकली मोतियों का हार.
फटका-कटका और चटाई,
और बर्तन और कड़ाही.
और जैक और टायर,
और बोरे और वायर
खाट और टूटी कठपुतली
और उनके साथ में
डोरी और सुतली
कुछ मोटी कुछ पतली!



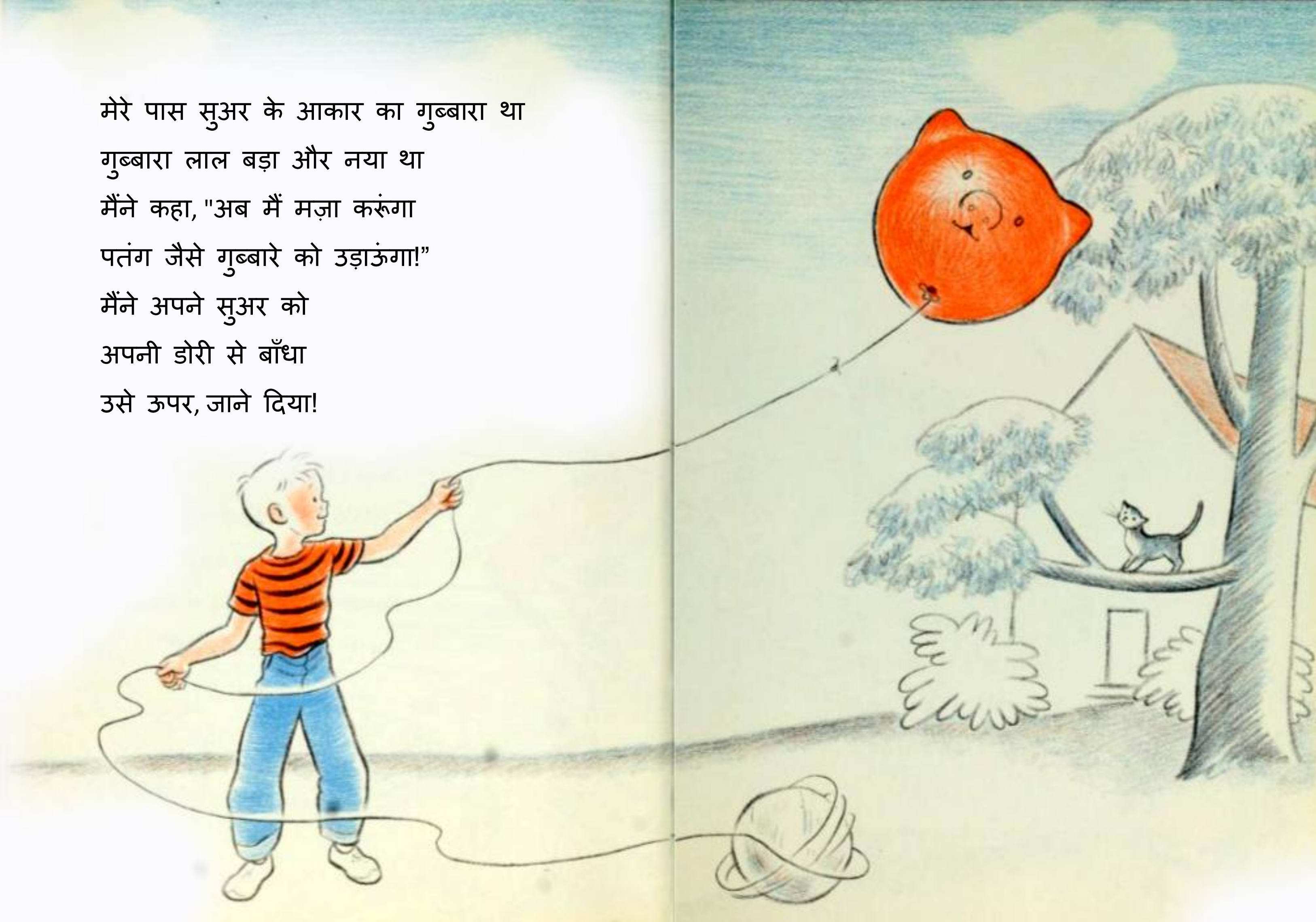


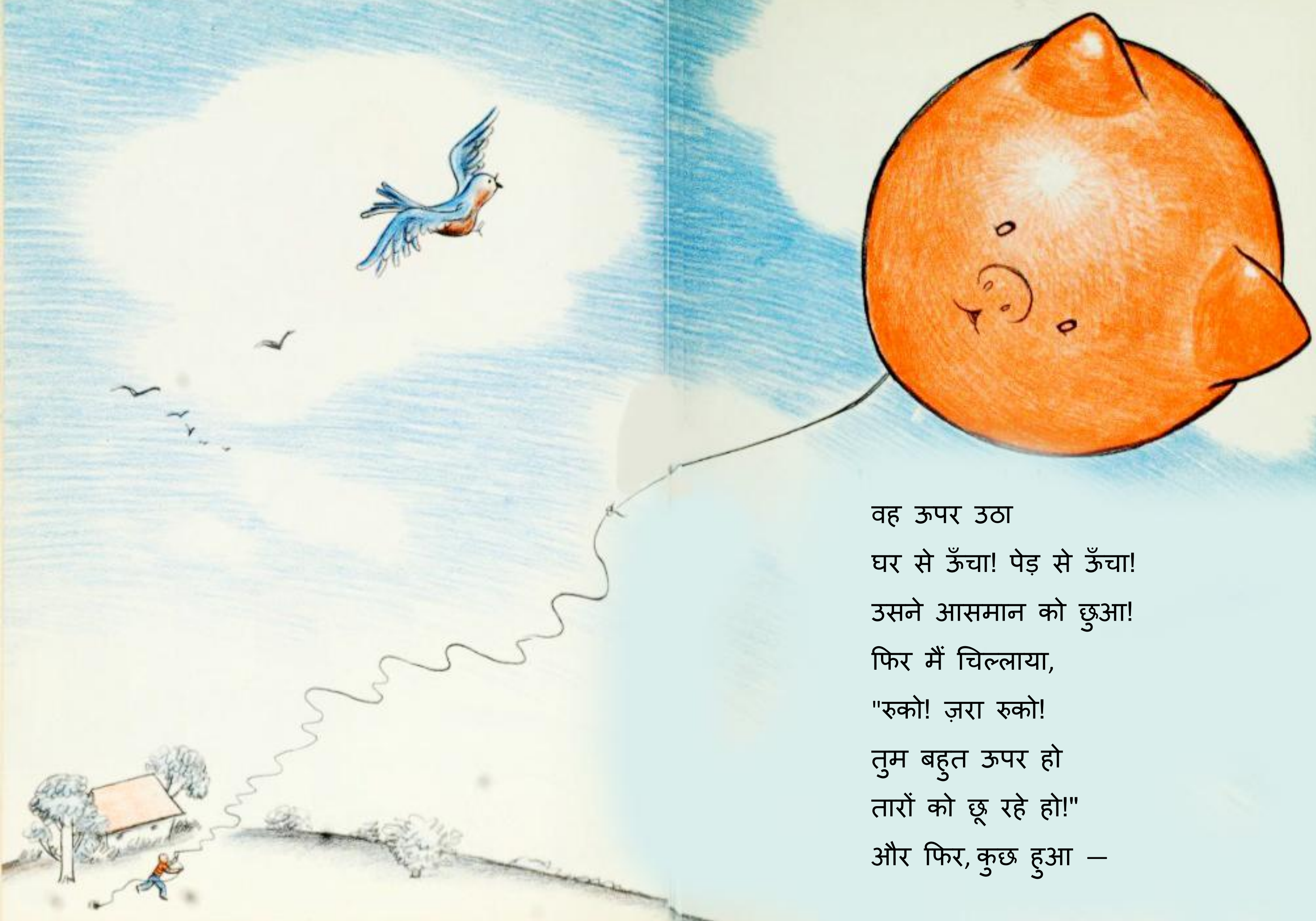


मैंने सारी डोरियों को
अपनी छोटी गेंद पर लपेटा.
धीरे-धीरे गेंद फूल के कुप्पा हुई
वो एक बहुत बड़ी गेंद बन गई.
मेरी गेंद बहुत बड़ी थी!
वो मेरे सिर जितनी बड़ी थी!
फिर मैंने अपनी
बड़ी गेंद को निहारा.
और मैंने कहा:
"अब मैं सोच समझकर
अपनी डोरी की बड़ी गेंद से
कुछ बढ़िया जुगाड़ लगाऊंगा
कोई उम्दा चीज़ बनाऊंगा!"



मेरे पास सुअर के आकार का गुब्बारा था
गुब्बारा लाल बड़ा और नया था
मैंने कहा, "अब मैं मज़ा करूंगा
पतंग जैसे गुब्बारे को उड़ाऊंगा!"
मैंने अपने सुअर को
अपनी डोरी से बाँधा
उसे ऊपर, जाने दिया!





वह ऊपर उठा

घर से ऊँचा! पेड़ से ऊँचा!

उसने आसमान को छुआ!

फिर मैं चिल्लाया,

"रुको! ज़रा रुको!

तुम बहुत ऊपर हो

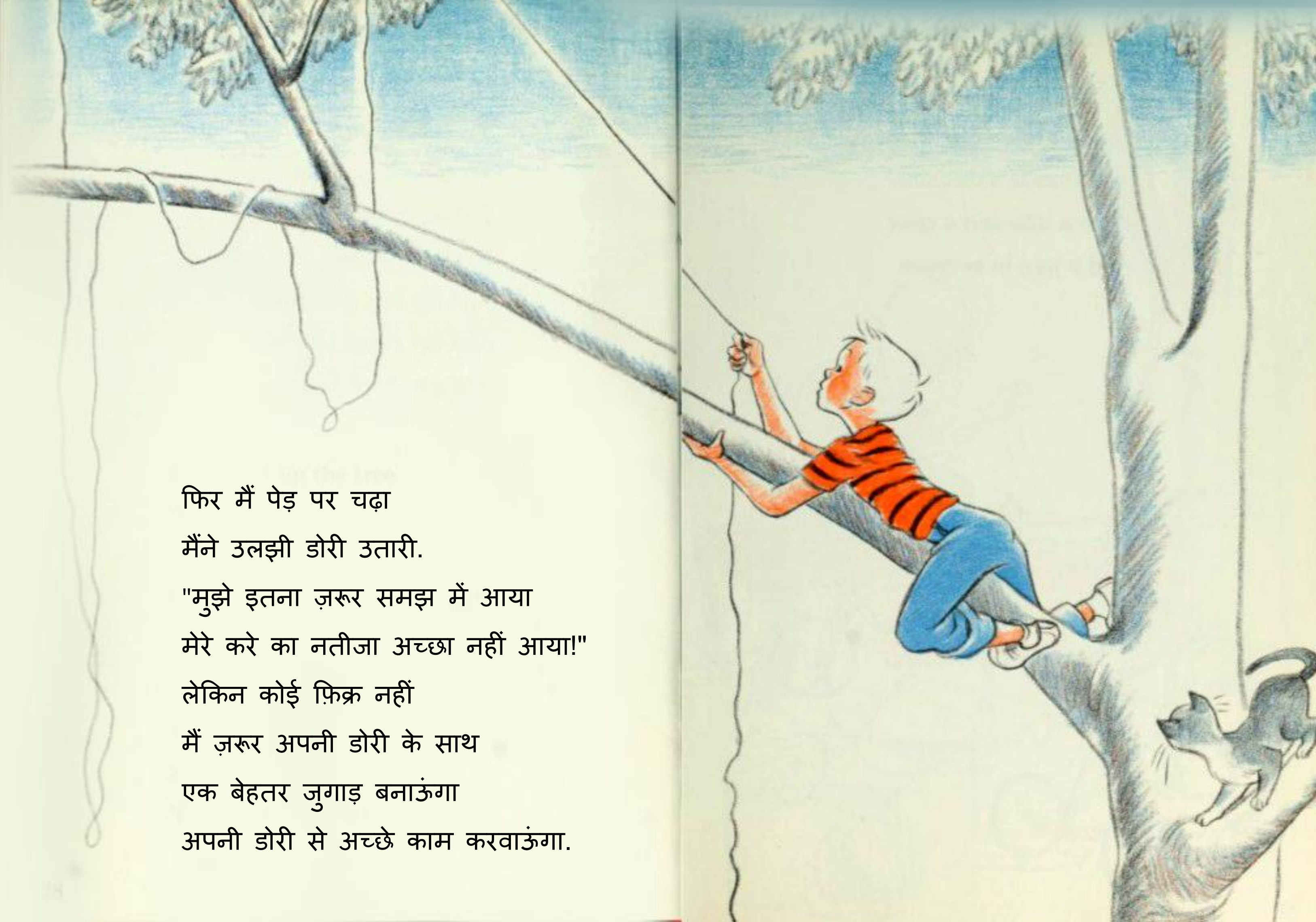
तारों को छू रहे हो!"

और फिर, कुछ हुआ –



फिर एक फटाका हुआ!
फिर मेरा नया लाल सुअर!
मोटा नहीं रहा,
वह टुकड़ों में फट गया,
सारे टुकड़े ज़मीन पर गिरे
कुछ टुकड़े मुझ पर बिखरे.
डोरी भी ज़मीन पर गिरी,
वो एक पेड़ में जाकर फंसी.





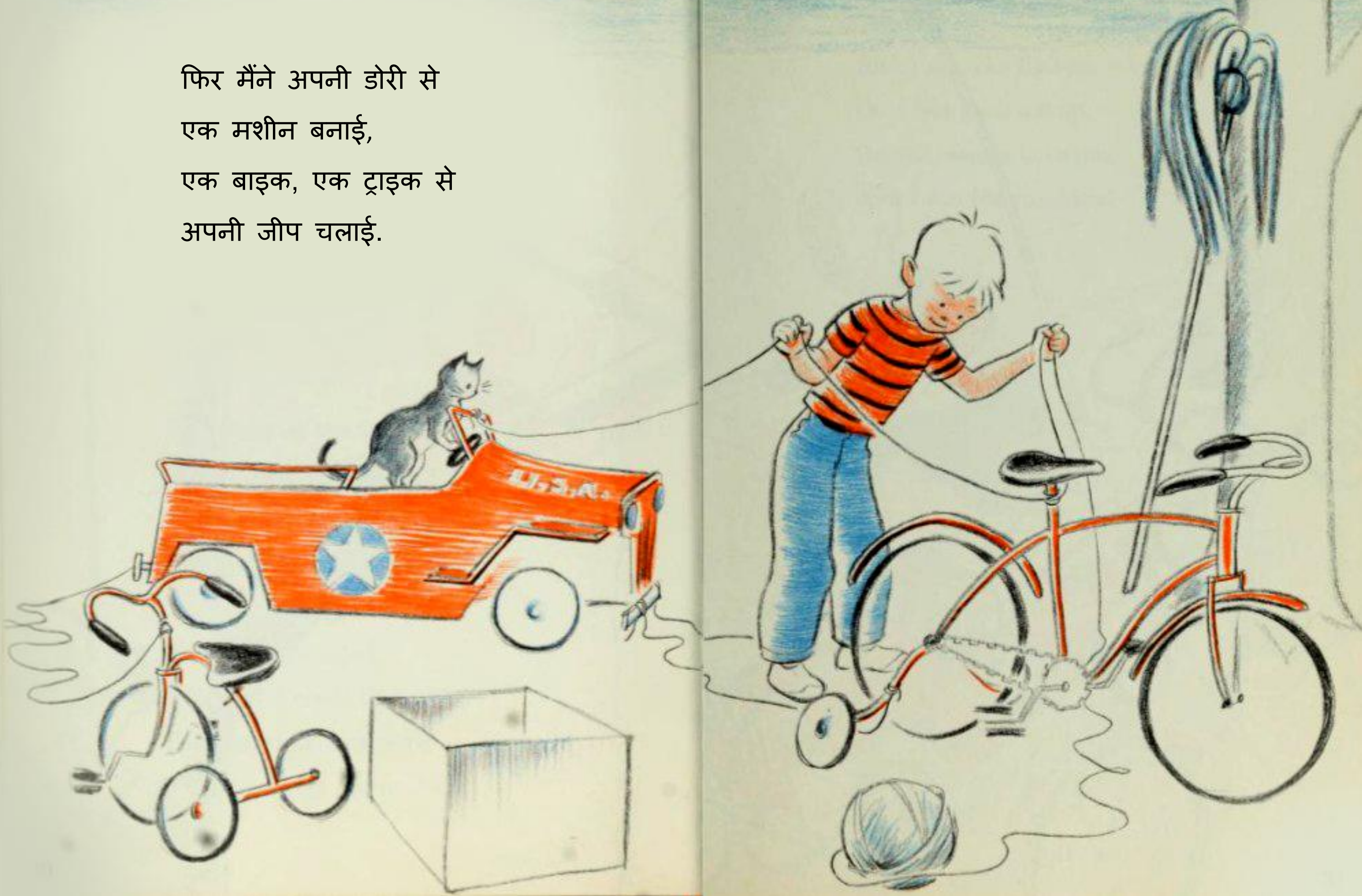
फिर मैं पेड़ पर चढ़ा
मैंने उलझी डोरी उतारी.
"मुझे इतना ज़रूर समझ में आया
मेरे करे का नतीजा अच्छा नहीं आया!"
लेकिन कोई फ़िक्र नहीं
मैं ज़रूर अपनी डोरी के साथ
एक बेहतर जुगाड़ बनाऊंगा
अपनी डोरी से अच्छे काम करवाऊंगा.

फिर मैंने अपनी डोरी से

एक मशीन बनाई,

एक बाइक, एक ट्राइक से

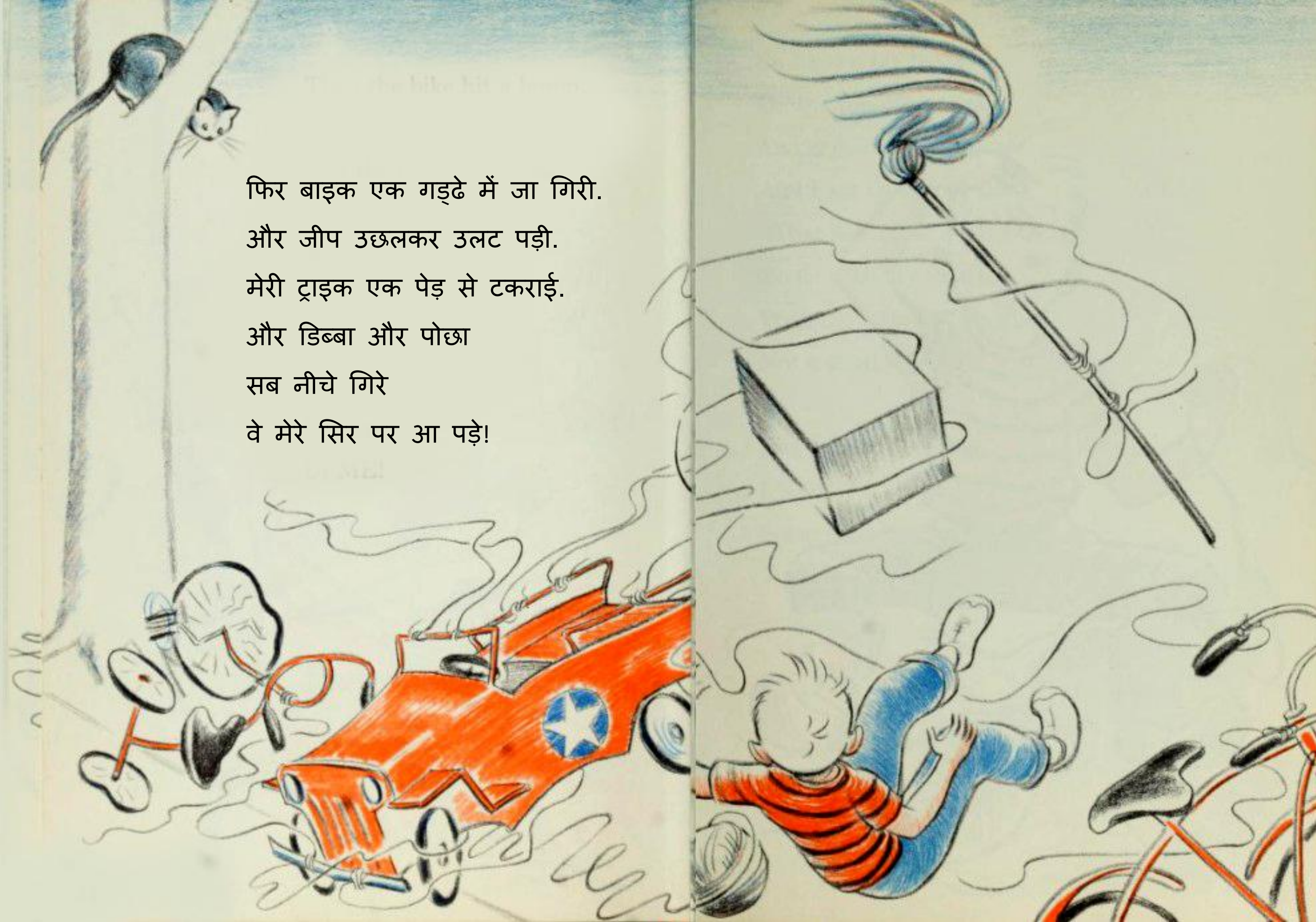
अपनी जीप चलाई.





मैं अपनी नई गाड़ी में बैठा
गर्व से मैंने गर्दन को ऐंठा
बाइक और ट्राइक के बीच में जीप
मेरी मोटर चली बीप-बीप!

फिर बाइक एक गड्ढे में जा गिरी.
और जीप उछलकर उलट पड़ी.
मेरी ट्राइक एक पेड़ से टकराई.
और डिब्बा और पोछा
सब नीचे गिरे
वे मेरे सिर पर आ पड़े!





पोछे का डंडा मेरे सिर से लगा
पर एक बड़ा सा धमाका हुआ
मेरे सिर पर एक मोटा सा घूमड़ बना.
मैंने वहीं बैठे-बैठे खुद से कहा,
"मैंने जो डोरी के साथ किया
वो कुछ अच्छा नहीं किया
मैंने अपनी डोरी की बड़ी गेंद से
बिल्कुल भी अच्छा नहीं किया!"
लेकिन मुझे कोई फ़िक्र नहीं थी.
मुझे पता था कि मैं
अपनी डोरी की गेंद से
कुछ बढ़िया जुगाड़ बनाऊंगा
कोई उम्दा चीज़ बनाऊंगा!



फिर मैं बिस्तर पर बैठा.
"कल मैं अपनी डोरी को निकालूँगा
फिर मैं चारों ओर देखूँगा
मैं अपनी डोरी के साथ
कई अच्छे काम करूंगा
उसके अनेको उपयोग खोजूंगा
कल के दिन मैं यही करूँगा."
फिर मैंने अपनी डोर को रखा
और मैं सोने चला गया.

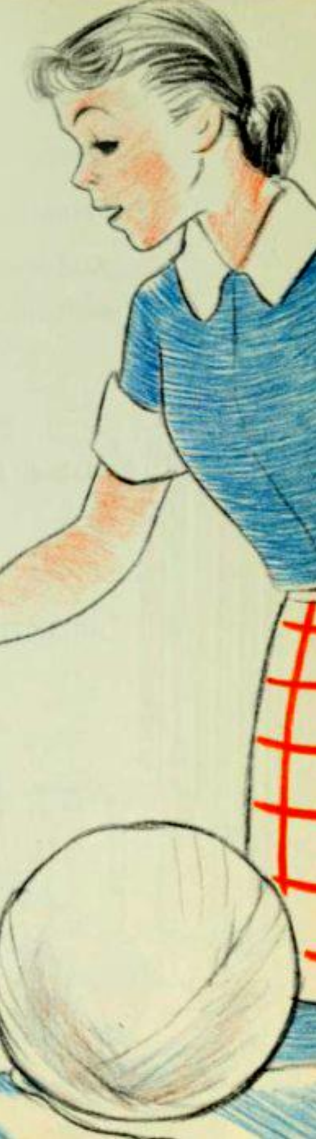




लेकिन फिर मेरी नींद खुली
मेरे सिर में ज़ुकाम जो था.

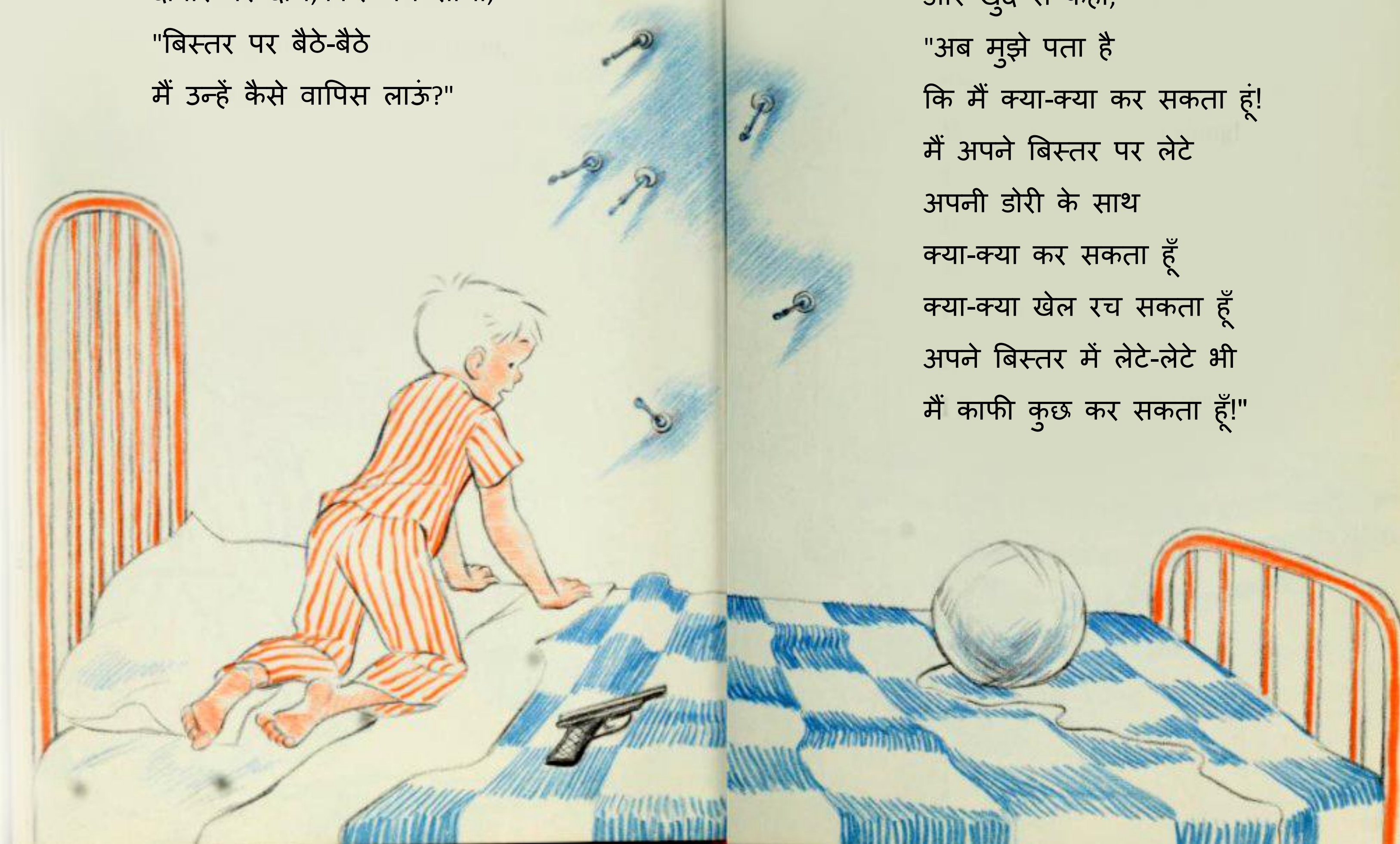


कुछ देर में माँ अंदर आईं,
और उन्होंने कहा,
"देखो, बिस्तर पर ही रहो.
सिर में ज़ुकाम के साथ,
बिस्तर पर ही रहो!
बिस्तर पर ही रहो!"

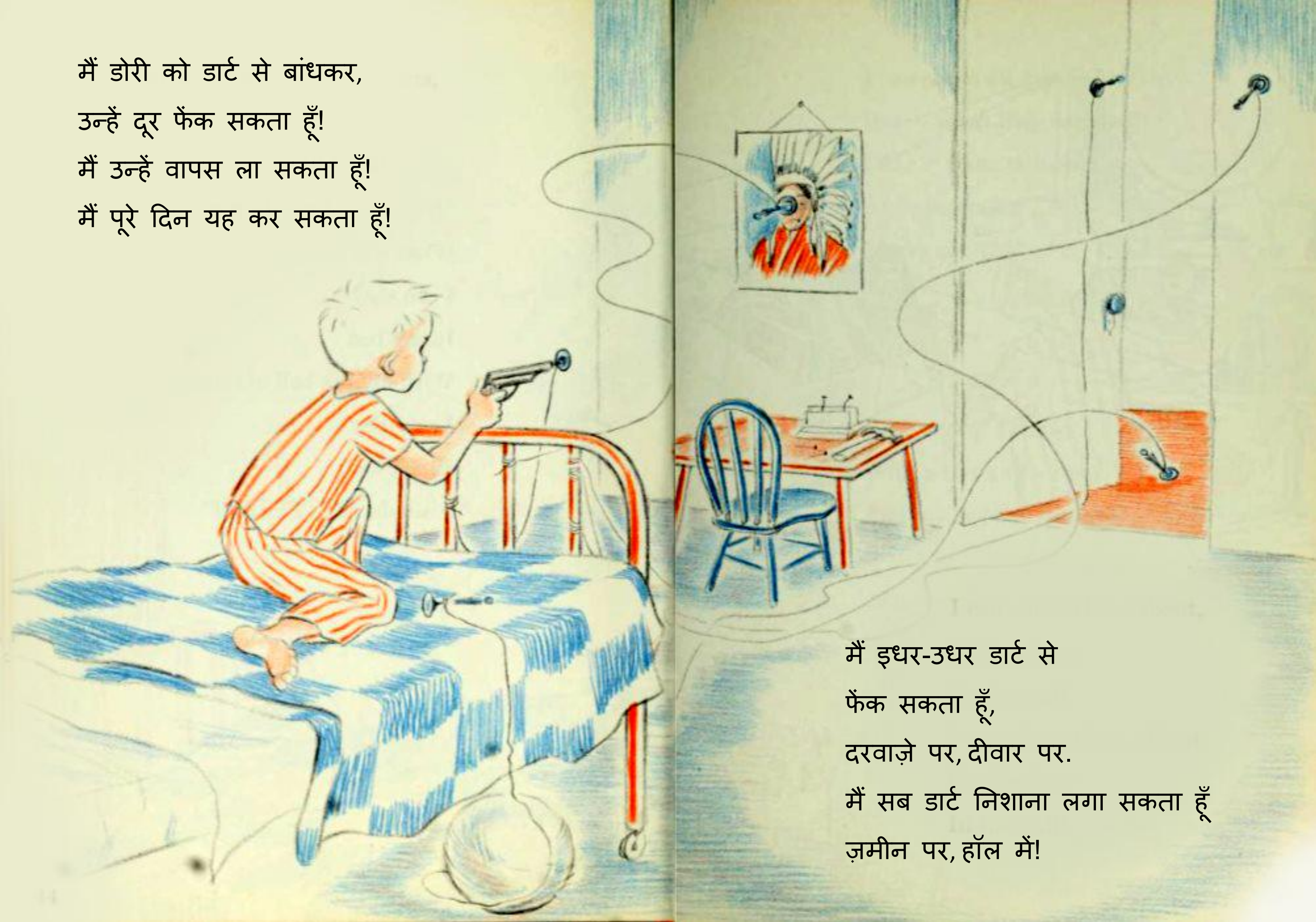


मैंने बन्दूक से अपने सारे डार्ट
दीवार पर दागे, फिर मैंने सोचा,
"बिस्तर पर बैठे-बैठे
मैं उन्हें कैसे वापिस लाऊं?"

फिर मैंने अपनी डोरी को देखा,
और खुद से कहा,
"अब मुझे पता है
कि मैं क्या-क्या कर सकता हूं!
मैं अपने बिस्तर पर लेटे
अपनी डोरी के साथ
क्या-क्या कर सकता हूँ
क्या-क्या खेल रच सकता हूँ
अपने बिस्तर में लेटे-लेटे भी
मैं काफी कुछ कर सकता हूँ!"



मैं डोरी को डार्ट से बांधकर,
उन्हें दूर फेंक सकता हूँ!
मैं उन्हें वापस ला सकता हूँ!
मैं पूरे दिन यह कर सकता हूँ!

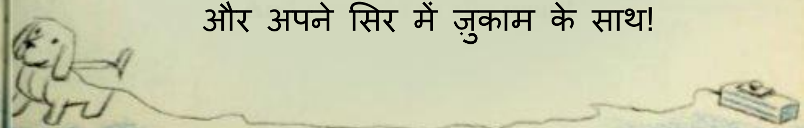


मैं इधर-उधर डार्ट से
फेंक सकता हूँ,
दरवाज़े पर, दीवार पर.
मैं सब डार्ट निशाना लगा सकता हूँ
ज़मीन पर, हॉल में!

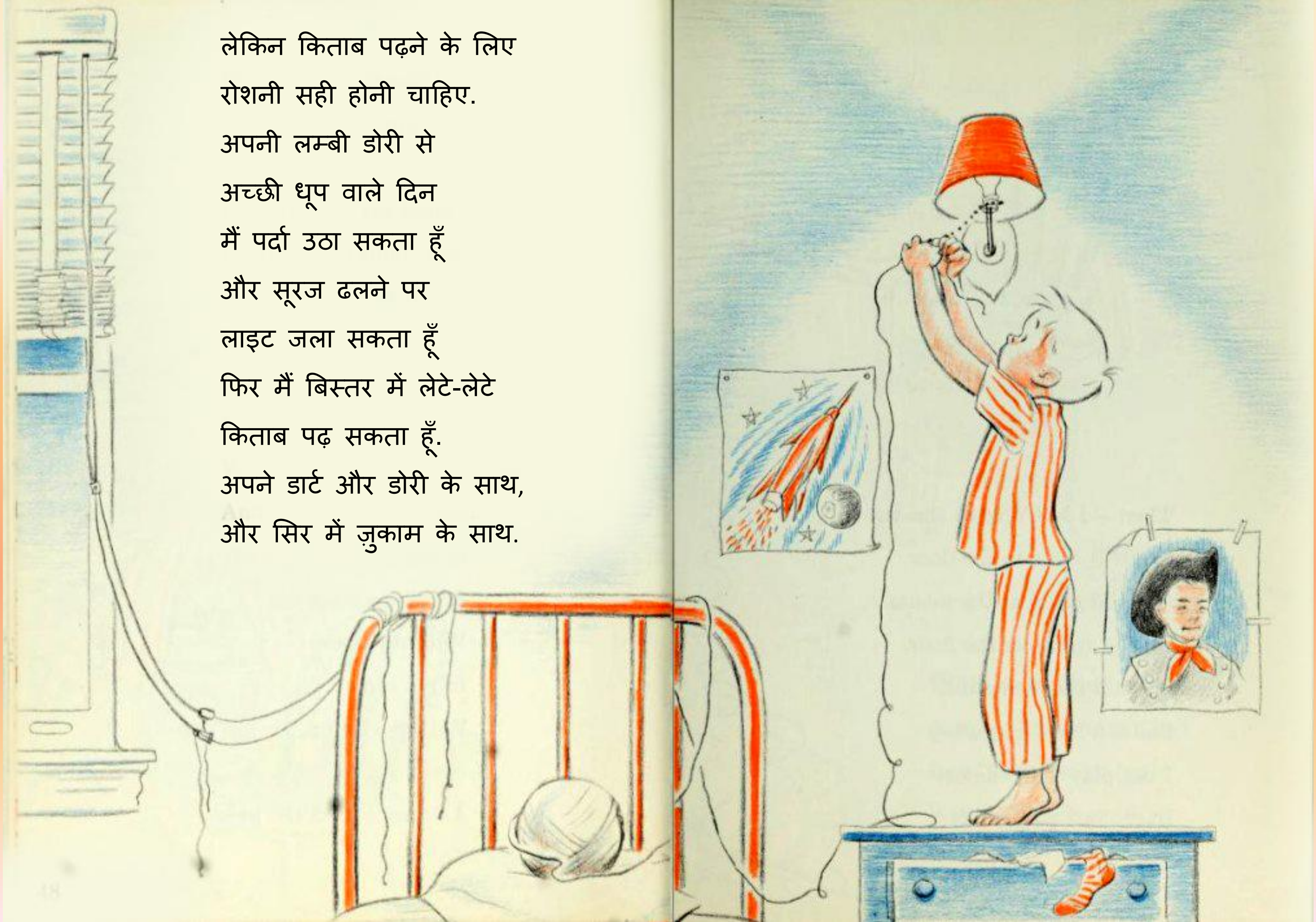


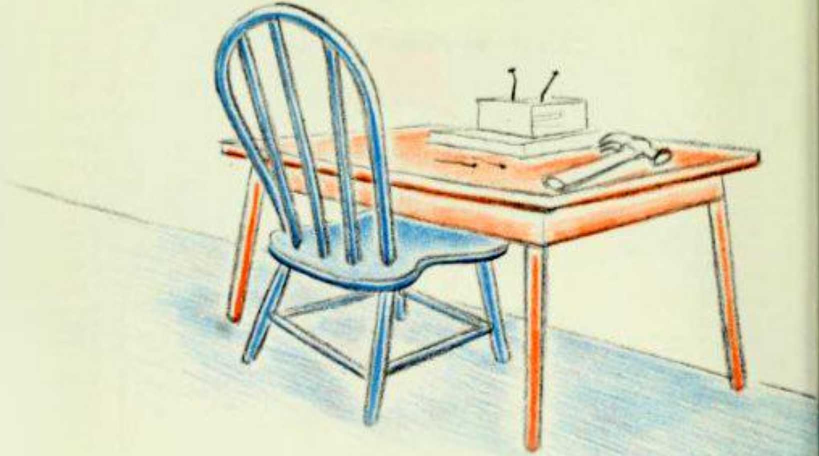
मैं अपने सारे डार्ट फेंक सकता हूँ.
लेकिन सारे डार्ट शूट करने के बाद,
मैं कुछ किताबें पढ़ना चाहूँ
किताबें पढ़ अपना मन बहलाऊं.

मैं एक जुगाड़ बना सकता हूँ
एक डिब्बे और हुक के साथ
और अपनी डोरी के साथ.
मैं किताबें अपने पास ला सकता हूं.
और पढ़ने का मज़ा ले सकता हूँ
अपने बिस्तर में लेटे-लेटे.
अपनी डोरी के साथ,
और अपने डार्ट के साथ.
और अपने सिर में ज़ुकाम के साथ!



लेकिन किताब पढ़ने के लिए
रोशनी सही होनी चाहिए.
अपनी लम्बी डोरी से
अच्छी धूप वाले दिन
मैं पर्दा उठा सकता हूँ
और सूरज ढलने पर
लाइट जला सकता हूँ
फिर मैं बिस्तर में लेटे-लेटे
किताब पढ़ सकता हूँ.
अपने डार्ट और डोरी के साथ,
और सिर में ज़ुकाम के साथ.



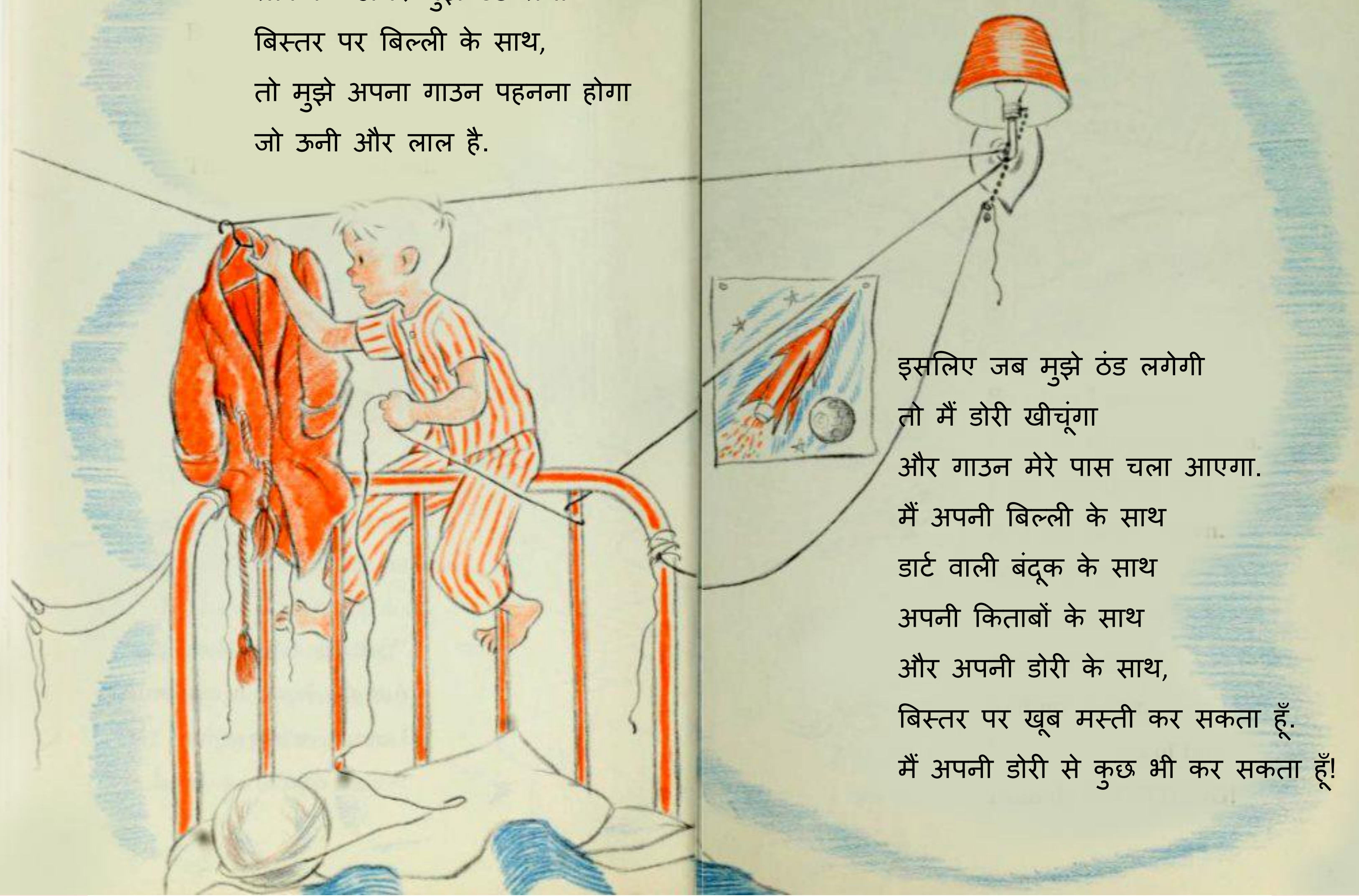


फिर मुझे अपनी - बिल्ली अच्छी लगेगी.
वह दरवाज़े पर आएगी.
वह डोरी से बंधे चूहे पर कूदेगी
अगर मैं दरवाज़ा बंद कर दूंगा,
तो फिर वह भाग नहीं पाएगी.
फिर मैं सारा दिन बिस्तर पर लेटे
अपनी बिल्ली के साथ खेल सकूंगा.



अपनी बिल्ली, डार्ट वाली बंदूक,
और अपनी किताबों के साथ,
मैं खूब मस्ती करूंगा
सर्दी होने के बावजूद.

लेकिन - अगर मुझे ठंड लगी
बिस्तर पर बिल्ली के साथ,
तो मुझे अपना गाउन पहनना होगा
जो ऊनी और लाल है.

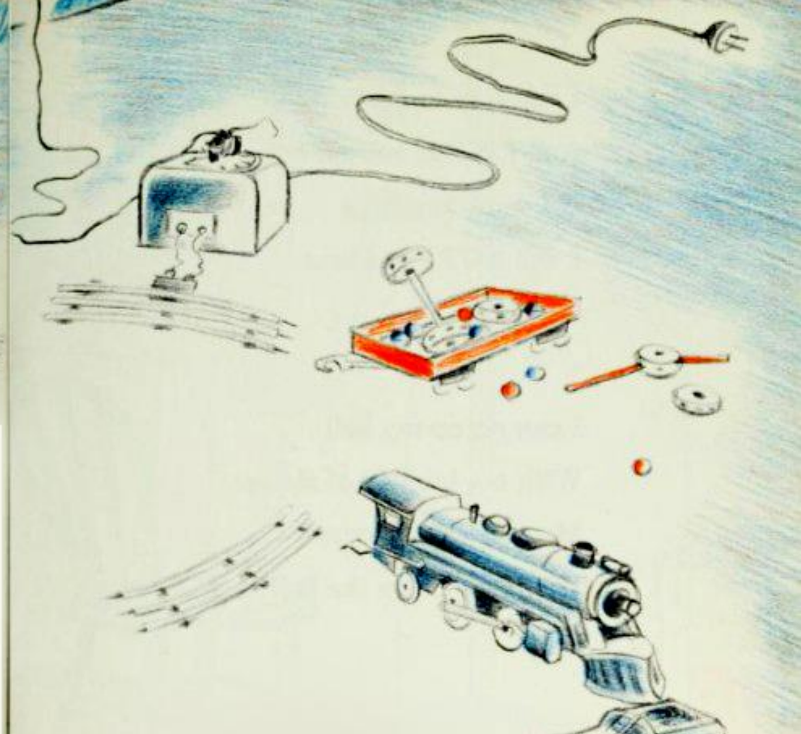


इसलिए जब मुझे ठंड लगेगी
तो मैं डोरी खीचूंगा
और गाउन मेरे पास चला आएगा.
मैं अपनी बिल्ली के साथ
डार्ट वाली बंदूक के साथ
अपनी किताबों के साथ
और अपनी डोरी के साथ,
बिस्तर पर खूब मस्ती कर सकता हूँ.
मैं अपनी डोरी से कुछ भी कर सकता हूँ!



अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे
अपनी डोरी की मदद से
मैं अपनी ट्रेन चला सकता हूँ.
मैं उसे तेज़ भगा सकता हूँ.
मैं उसे धीमा चला सकता हूँ.





अपने बिस्तर पर
अपनी किताबों के साथ,
और अपनी ट्रेन के साथ,
अपनी बिल्ली,
और अपनी बंदूक के साथ
मैं कुछ भी कर सकता हूँ!

मैं अपने बिस्तर पर ही रहूँगा.
मैं बिल्कुल बाहर नहीं निकलूँगा.
अगर मुझे कुछ चाहिए, तो भी
मैं इधर-उधर नहीं भागूँगा.
मैं अपनी घंटी को
डोरी से बांध दूंगा.
घंटी की आवाज़ सुनते ही
माँ दौड़ी आएंगी
और फिर वह यह देखेंगी
कि मैं बिस्तर पर लेटा हूँ
अपनी डोरी के साथ.
और तमाम अपनी चीज़ों के साथ
और अपने सिर में सर्दी के साथ!

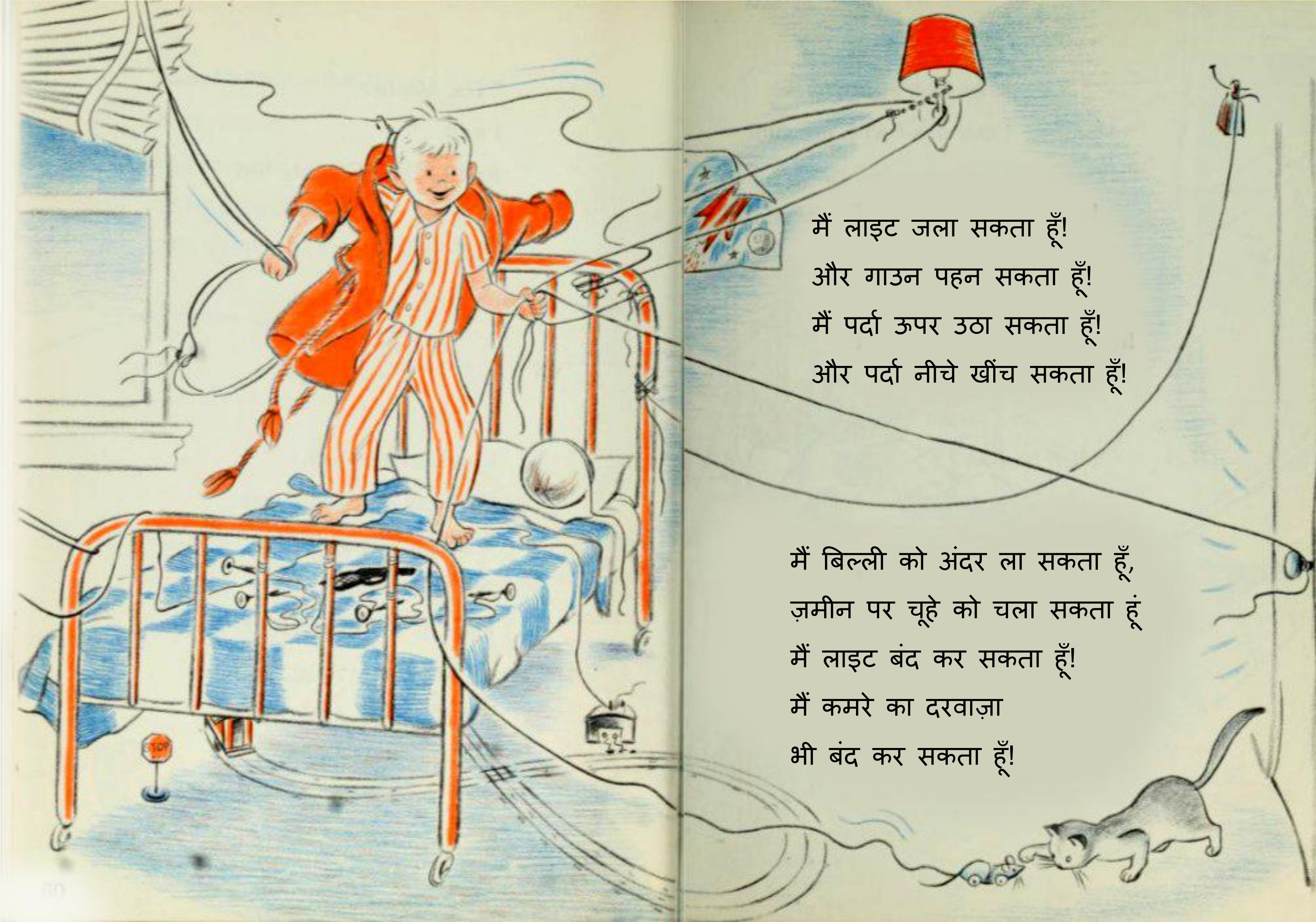


फिर माँ ने मुझे पुकारा
कमरे में मुझसे पूछा,
"कैसी है सर्दी तुम्हारी?
क्या तुम बिस्तर पर ही लेटे रहे?"



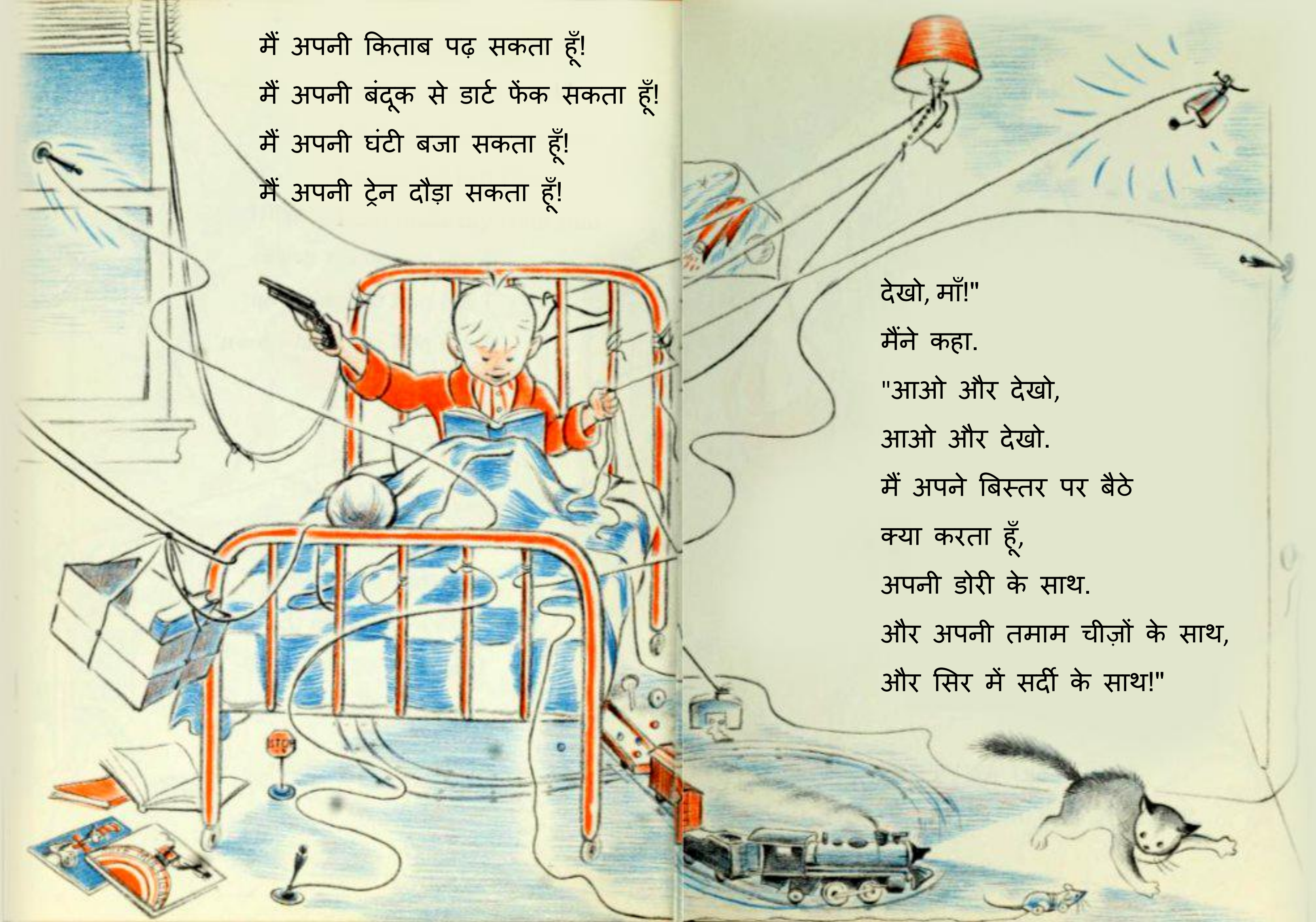
"हाँ, माँ," मैंने कहा.
और मैं बिस्तर पर कूदा.

मैं बिस्तर पर कूदा
अपनी डोरी की गेंद लेकर.
अपनी डोरी से,
मैं कुछ भी कर सकता हूँ.
मैं कुछ भी, कुछ भी,
कुछ भी सकता हूँ!



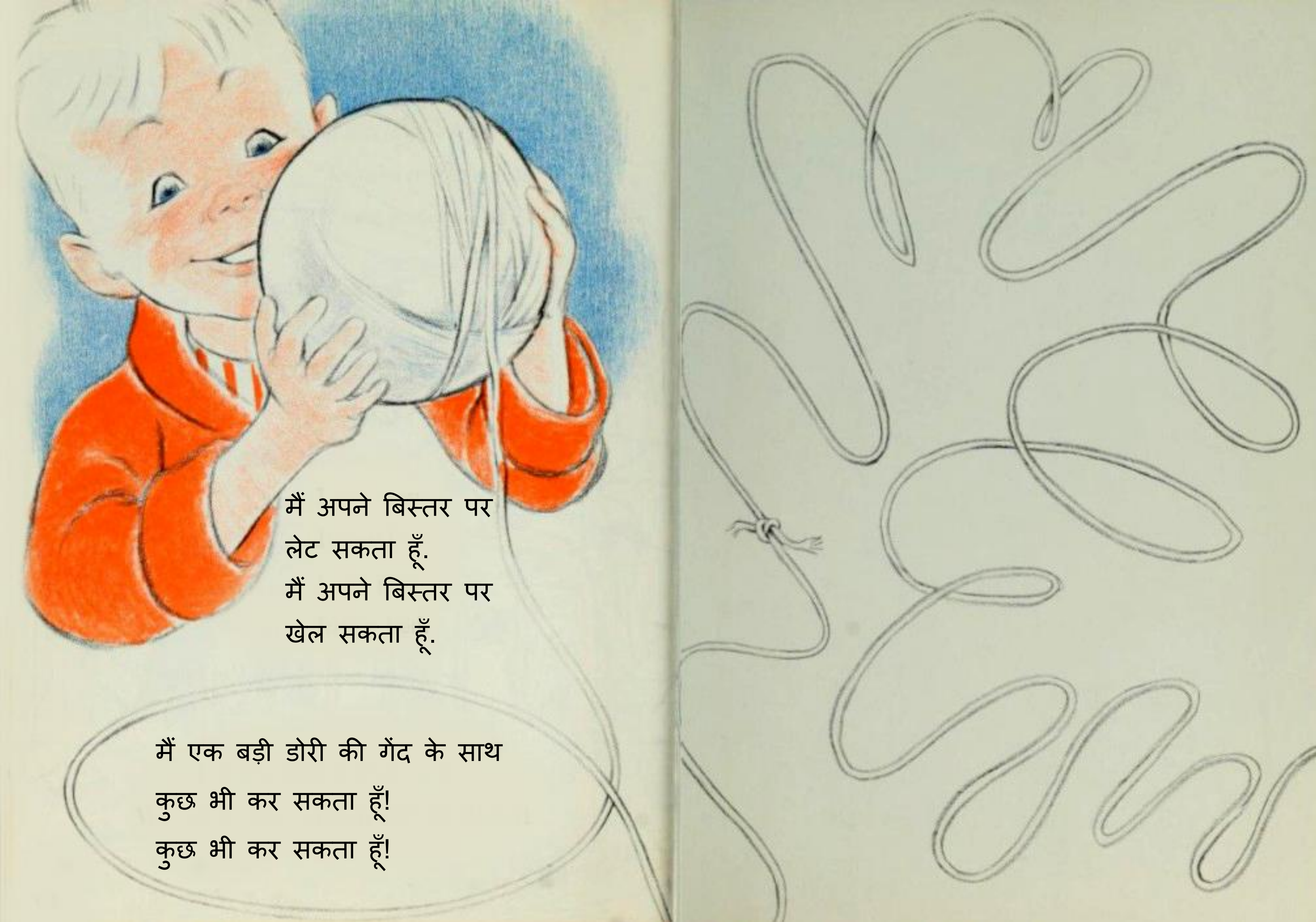
मैं लाइट जला सकता हूँ!
और गाउन पहन सकता हूँ!
मैं पर्दा ऊपर उठा सकता हूँ!
और पर्दा नीचे खींच सकता हूँ!

मैं बिल्ली को अंदर ला सकता हूँ,
ज़मीन पर चूहे को चला सकता हूं
मैं लाइट बंद कर सकता हूँ!
मैं कमरे का दरवाज़ा
भी बंद कर सकता हूँ!



मैं अपनी किताब पढ़ सकता हूँ!
मैं अपनी बंदूक से डार्ट फेंक सकता हूँ!
मैं अपनी घंटी बजा सकता हूँ!
मैं अपनी ट्रेन दौड़ा सकता हूँ!

देखो, माँ!"
मैंने कहा.
"आओ और देखो,
आओ और देखो.
मैं अपने बिस्तर पर बैठे
क्या करता हूँ,
अपनी डोरी के साथ.
और अपनी तमाम चीज़ों के साथ,
और सिर में सर्दी के साथ!"



मैं अपने बिस्तर पर
लेट सकता हूँ.
मैं अपने बिस्तर पर
खेल सकता हूँ.

मैं एक बड़ी डोरी की गेंद के साथ
कुछ भी कर सकता हूँ!
कुछ भी कर सकता हूँ!

